मलयाळम माध्यम
डिप्लोमा पाठ्यक्रम

© C.H.D. Govt. of India KIT-11	**पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग** ഡിപ്പാർട്ട്മെൻറ് ഓഫ് കറസ്പോണ്ടൻസ് കോഴ്സസ് **केंद्रीय हिंदी निदेशालय** സെൻട്രൽ ഹിന്ദി ഡയറക്ടറേറ്റ്	पाठ പാഠം } 21&22

हिंदी डिप्लोमा कोर्स

ഹിന്ദി ഡിപ്ളോമ കോഴ്സ്

पाठ/പാഠം—21

ഉള്ളടക്കം

1.0 മുഖവുര

2.0 മാതൃകാ ചോദ്യപേപ്പർ

3.0 ഉത്തരങ്ങൾ

1.0 പാഠത്തെക്കുറിച്ച്

ഈ പാഠത്തിൽ രണ്ട് ഭാഗങ്ങൾ ആണുള്ളത്. ഒന്നാം ഭാഗത്തിൽ ഏതാനും മാതൃകാ ചോദ്യങ്ങൾ ആണ് നൽകിയിരിക്കുന്നത്. ഏപ്രിൽ/മേയ് മാസത്തിൽ നടക്കുന്ന പരീക്ഷയ്ക്ക് ഇവ സഹായകമാകും. നിങ്ങൾക്ക് മുമ്പ് അയച്ചിട്ടുള്ള പാഠഭാഗങ്ങളെ (ഗദ്യം, പദ്യം, ഏകാങ്ക നാടകം എന്നിവയെ) ആധാരമാക്കിയുള്ളവയാണ്.

1.1 **ഈ പാഠഭാഗം എങ്ങനെ പ്രയോജനപ്പെടുത്താം.**

മാതൃകാചോദ്യങ്ങൾ സശ്രദ്ധം വായിച്ച് തന്നിട്ടുള്ള എല്ലാ ചോദ്യങ്ങൾക്കും പ്രത്യേകം ഉത്തരമെഴുതാൻ ശ്രമിക്കുക.

हिंदी डिप्लोमा परीक्षा

ഹിന്ദി ഡിപ്ളോമ പരീക്ഷ

प्रश्न पत्र-1 (गद्य, पद्य तथा एकांकी)

ചോദ്യപേപ്പർ-1 (ഗദ്യം, പദ്യം, ഏകാങ്ക നാടകം)

समय : 3 घंटे | कुल अंक : 150

സമയം : 3 മണിക്കൂർ | ആകെ മാർക്ക് : 150

नोट : कृपया सभी प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखें।

കുറിപ്പ് : എല്ലാ ചോദ്യങ്ങൾക്കും ഹിന്ദിയിൽ ഉത്തരമെഴുതുക.

1. सही उत्तर के सामने सही का चिह्न (✓) दिए गए कोष्ठक में लगाइए।

ശരിയായ ഉത്തരത്തിനു നേരെ (✓) എന്ന് അടയാളപ്പെടുത്തുക 5×2=10

(क) डॉ० ऋषि कुमार चक्रवर्ती स्टेशन क्यों नहीं गए?

(1) वे बीमार थे। ☐

(2) उनको सक्सेना की चिट्ठी नहीं मिली थी। ☐

(3) वे स्टेशन जाना नहीं चाहते थे। ☐

(ख) देवदत्त महाराज शुद्धोदन के पास क्यों गया?

(1) अपने झगड़े के फैसले के लिए। ☐

(2) अपनी बात मनवाने के लिए। ☐

(3) अपनी बहादुरी दिखाने के लिए। ☐

(ग) चंबल नदी की विशेषता क्या है ?

(1) यह उत्तर से दक्षिण की ओर बहती है। ☐

(2) यह पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है। ☐

(3) यह दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है। ☐

(घ) शेखर किस पद के लिए इंटरव्यू देने आया था ?

(1) अवर श्रेणी लिपिक के पद के लिए। ☐

(2) हिंदी अधिकारी के पद के लिए। ☐

(3) हिंदी अनुवादक के पद के लिए। ☐

(ङ) जादूगर का खेल एक दिन क्यों नहीं जमा ?

(1) उसकी माँ की अंतिम घड़ी समीप थी। ☐

(2) उस दिन उसे अधिक पैसे नहीं मिले थे। ☐

(3) उसके खिलौने गायब थे। ☐

2. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 5×3=15

ഏതെങ്കിലും അഞ്ചു ചോദ്യങ്ങൾക്ക് ഉത്തരമെഴുതുക

(1) सरदार सुजानसिंह ने राजा साहब से क्या प्रार्थना की ? (परीक्षा)

.....

.....

(2) निजी सहायक दफ्तर में ठीक समय पर क्यों नहीं आए ? (कार्यालय की समस्याएँ)

.....

.....

(3) राष्ट्रीय एकता के लिए हमारा क्या कर्तव्य है ? (राष्ट्रीय एकता)

.....

.....

(4) डॉक्टर चक्रवर्ती ने रवि कपूर को खून की जाँच करवाने की सलाह क्यों दी ?

(डॉक्टर चक्रवर्ती के क्लिनिक में)

.....

.....

(5) भक्त भगवान से क्या प्रार्थना करता है ? (खोज)

.....

.....

(6) माँडवा का बाजार किन वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध है ? (माँडवा–रेगिस्तान का हीरा)

.....

.....

(7) भूल की पाठशाला में सीखे हुए सबक बड़े काम के क्यों होते हैं ?

(काम करो, सोच में न पड़े रहो)

.....

.....

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच के उत्तर दीजिए। 5×4=20

ഏതെങ്കിലും അഞ്ചു ചോദ്യങ്ങൾക്ക് ഉത്തരമെഴുതുക.

(1) मनोहर ने बाबूजी पर क्या आरोप लगाया? (बस टिकट)

.....

.....

(2) कंजूस की तिजोरी से निकलकर रुपया कहाँ-कहाँ गया? (रुपए की आत्मकथा)

.....

.....

(3) हिंदुस्तान के लोगों को पं० जवाहरलाल नेहरू से प्यार क्यों था? (आखिरी-वसीयत)

.....

.....

(4) नरकासुर ने श्री कृष्ण से क्या वरदान माँगा? (दीपावली)

.....

.....

(5) रामेश्वरी मनोहर से क्यों प्रेम नहीं करती थी? (ताई)

.....

.....

(6) पं० अलोपीदीन ने मुंशी वंशीधर को अपनी जायदाद का स्थाई मैनेजर क्यों बनाया? (नमक का दारोगा)

.....

.....

(7) अवर श्रेणी लिपिक के क्या-क्या काम होते हैं ? (कार्यालय की समस्याएँ)

.....

.....

4. निम्नलिखित पाठों में से किसी एक का सार लगभग 150 शब्दों में लिखिए। 20

ചുവടെ കൊടുത്തിരിക്കുന്ന പാഠങ്ങളിൽ ഏതെങ്കിലും ഒന്നിൻെറ സാരാംശം ഉദ്ദേശം 150 വാക്കുകളിൽ എഴുതുക.

(1) हम और हमारा स्वास्थ्य।

(2) माँडवा-रेगिस्तान का हीरा।

(3) आखिरी वसीयत।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5. (क) निम्नलिखित शब्दों/अभिव्यक्तियों में से किन्हीं दस का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए। 10

ചുവടെ കൊടുത്തിരിക്കുന്ന പദങ്ങൾ / വാക്യാംശങ്ങളിൽ ഏതെങ്കിലും പത്തെണ്ണം സ്വന്തം വാക്യത്തിൽ പ്രയോഗിക്കുക.

(1) एक-एक करके.....

.....

(2) परिवहन.....

.....

(3) शायद.....

.....

(4) अनुभव.....

.....

(5) इंतजार करना .....

.....

(6) सैर-सपाटा .....

.....

(7) विशेषता .....

.....

(8) हाथ मलते रह जाना .....

.....

(9) कारीगर .....

.....

(10) अतिथि .....

.....

(11) माफ कीजिए .....

.....

(12) बधाई देना .....

.....

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दस के हिंदी पर्याय लिखिए। 10

താഴെ കൊടുത്തിരിക്കുന്ന പദങ്ങളിൽ ഏതെങ്കിലും പത്തെണ്ണത്തിനു സമാന ഹിന്ദി പദങ്ങൾ എഴുതുക.

(i) സ്ഥലം മാറ്റം .....

(ii) സഹാനുഭൂതി .....

(iii) എതിർപ്പ് .....

(iv) പുഞ്ചിരിക്കുക .....

(v) വഴക്ക് .....

(vi) ചരമവാർഷികം .....

(vii) പവിത്രമായ .....

(viii) ക്രമമായി .....

(ix) സാധാരണമായ .....

(x) മാദ്ധ്യമം .....

(xi) കുറ്റം .....

(xii) പോക്കറ്റടി .....

(xiii) ആഘോഷം .....

(xiv) ശ്രദ്ധയില്ലാതെ .....

(xv) വരം .....

6. नीचे दिए गए अवतरण को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

ചുവടെയുള്ള ഖണ്ഡിക വായിച്ച് ചോദ്യങ്ങൾക്ക് ഉത്തരമെഴുതുക. 10

धर्म के नाम पर हमारे देश में अनेक अंधविश्वास प्रचलित हैं। यहाँ कभी देवी-देवता के नाम पर नर बलि दी जाती है तो कभी दहेज के लिए वधू को स्टोव के फटने का

2—558 CH Dte/2008

बहाना करके जला दिया जाता है। लेकिन नारी पर अमानुषिक अत्याचार का निर्लज्ज उदाहरण देवराला का सती-काँड है। इस सती-काँड से समाज के प्रत्येक व्यक्ति का सिर शर्म से झुक गया है।

आज हम इक्कीसवीं शताब्दी की बातें कर रहे हैं लेकिन हम अभी तक पुरानी बर्बर कुरीतियों से भी मुक्त नहीं हो पाए हैं।

यदि हम विचार करें तो पाएँगे कि प्राय: कोई स्त्री स्वेच्छा से सती नहीं होती। अक्सर उसके परिवार और समाज के लोग ही उसे सती होने पर विवश करते हैं।

(क) हमारे यहाँ धर्म के नाम पर क्या दी जाती है ?

.....

(ख) देवराला का सती-काँड किस प्रकार का उदाहरण है ?

.....

(ग) किस बात से प्रत्येक व्यक्ति का सिर शर्म से झुक गया है ?

.....

(घ) अक्सर कौन किसी स्त्री को सती होने के लिए विवश करते हैं ?

.....

(ङ) इस अवतरण का उपयुक्त शीर्षक (തലക്കെട്ട്) दीजिए।

.....

7. निम्नलिखित में से किसी एक कहानी का एकांकी पाठ का सार लगभग 250 शब्दों में लिखिए। 20

ഏതെങ്കിലും ഒരു ചെറുകഥയുടേയോ ഏകാങ്ക നാടകത്തിൻേറയോ സാരാംശം 250 വാക്കുകളിൽ എഴുതുക.

(1) न्याय।

(2) सुखमय जीवन।

(3) बस टिकट।

8. नीचे दिए गए अवतरणों में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 10×2=20

ഏതെങ്കിലും രണ്ട് ഉദ്ധരണികളുടെ സന്ദർഭം കുറിച്ച് ആശയം വിശദമാക്കുക.

(1) मैं ढूँढता तुझे था जब कुंज और वन में,
तू खोजता मुझे था तब दीन के वतन में।
तू आह बन किसी की मुझको पुकारता था,
मैं था तुझे बुलाता संगीत में, भजन में।

अथवा

गरजता है अगर अंबर लरजती है अगर धरती,
मगर खाली नहीं बैठो, इसी में देश की जय है,
हजारों आँधियाँ आएँ, हजारों बिजलियाँ टूटें,
कुदाली को रहो थामे, तुम्हारा ही हिमालय है।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(2) मेरे बीच में मत बोलो, नहीं तो सबके सामने आपकी पोल खोल दूँगा।

अथवा

जिंदगी भूलों के एक ढेर का नाम है। और अकल-बुद्धि? वह है इन भूलों से सीखा हुआ पाठ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ഉത്തരങ്ങൾ —1

ചോദ്യം —1. ഉത്തരം

(क) डॉ॰ ऋषि कुमार चक्रवर्ती स्टेशन क्यों नहीं गए ?

(2) उनको सक्सेना की चिट्ठी नहीं मिली थी।

(ख) देवदत्त महाराज शुद्धोदन के पास क्यों गया ?

(1) अपने झगड़े के फैसले के लिए।

(ग) चंबल नदी की विशेषता क्या है ?

(3) यह दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है।

(घ) शेखर किस पद के लिए इंटरव्यू देने आया था?

(2) हिंदी अधिकारी के पद के लिए।

(ङ) जादूगर का खेल एक दिन क्यों नहीं जमा?

(1) उसकी माँ की अंतिम घड़ी समीप थी।

ചോദ്യം—2 ഉത്തരം

(1) सरदार सुजानसिंह ने राजा साहब से यह प्रार्थना की कि आप मुझे दीवान पद से मुक्त कर दें।

(2) निजी सहायक अस्पताल गए थे। इसलिए दफ़्तर में वे ठीक समय पर नहीं आए।

(3) राष्ट्रीय एकता के लिए हमारा कर्तव्य है कि हम सब तरह की संकीर्णता छोड़ें और मिल-जुलकर काम करें।

(4) डॉक्टर चक्रवर्ती ने रवि कपूर को खून की जाँच करवाने की सलाह इसलिए दी ताकि मलेरिया का पता चल सकें।

(5) भक्त भगवान से ये प्रार्थना करता है कि हे भगवान तू मुझे कष्ट सहने की शक्ति दे। भक्त चाहता है कि वह दुखों में हार न माने और सुख में ईश्वर को न भूले।

(6) माँडवा का बाजार चुनरी, मखमली जूतियों और लाख की चूड़ियों आदि के लिए प्रसिद्ध है।

(7) भूल की पाठशाला में सीखे हुए सबक बड़े काम के होते हैं क्योंकि वे हमें आगे भूल करने से बचाते हैं।

ചോദ്യം—3. ഉത്തരം

(1) मनोहर ने बाबूजी पर आरोप लगाया कि आप दफ़्तर में कोई काम नहीं करते। दिन-भर गप्पें हाँकना और चाय पीना ही आपका काम है।

(2) कंजूस की तिजोरी से निकलकर रुपया कई जगह गया। वह कभी फल वाले के पास गया तो कभी मिठाई वाले के पास, कभी पंसारी की दुकान पर गया तो कभी भगवान के मंदिर पर।

(3) हिंदुस्तान के लोगों ने पं० नेहरू को उनकी देश सेवा और त्याग की भावना के लिए अपना प्यार दिया।

(4) नरकासुर ने श्रीकृष्ण से यह वरदान माँगा कि लोग बड़े सबेरे नरक चतुर्दशी के दिन उठें, तेल-स्नान करें, नए वस्त्र पहनें, पटाखे चलाएँ और खुशियाँ मनाएँ।

(5) रामेश्वरी के कोई संतान नहीं थी। मनोहर रामेश्वरी के देवर का बेटा था। वह उसे अपने बेटे के समान नहीं मानती थी। इसलिए इसे मनोहर से प्रेम न था।

(6) पं० अलोपीदीन मुंशी वंशीधर की कर्तव्यनिष्ठा से प्रभावित थे। इसलिए उन्होंने मुंशी वंशीधर को अपनी जायदाद का स्थाई मैनेजर बनाया था।

(7) अवर श्रेणी लिपिक का काम है अधिकारी के सामने नोट प्रस्तुत करना। दैनिकी को भी पूरा करना और डाक आदि भेजना।

(1) हम और हमारा स्वास्थ्य

डॉ० चक्रवर्ती ने एक बार अपने मोहल्ले के समुदाय केंद्र की सभा में स्वास्थ्य के बारे में भाषण दिया। भाषण का विषय था 'हम और हमारा स्वास्थ्य'। डॉ० चक्रवर्ती ने सभा में बताया कि स्वास्थ्य मनुष्य के लिए सबसे मूल्यवान वस्तु है क्योंकि स्वस्थ व्यक्ति ही संसार का आनंद ले सकता है। रोग कोई भी हो कष्टप्रद होता है। इसलिए कहा जाता है कि रोग के इलाज से अधिक अच्छा है कि उसकी रोकथाम के उपाय किए जाए। अच्छे स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक एवं संतुलित आहार आवश्यक है। संतुलित आहार से तात्पर्य है कि हमारे भोजन में कार्बोहाइट्रेट, वसा, विटामिन और खनिज लवण आदि की उचित मात्रा होनी चाहिए। हमारे भोजन की मात्रा शरीर के गठन और श्रम के आधार पर होनी चाहिए। संतुलित और पौष्टिक आहार के बिना हम कुपोषण के शिकार हो जाएँगे।

भोजन के साथ-साथ व्यायाम भी अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं। स्मरण रहे स्वास्थ्य के लिए घर और आसपास की सफाई भी उतनी जरूरी है जितने हमारे शरीर की। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रहता है। इसलिए हमें केवल शरीर को ही नहीं, अपने मन को भी स्वस्थ रखना चाहिए। मन की प्रसन्नता के लिए आवश्यक है कि हम अनावश्यक चिंताओं, तनावों, कुंठाओं से बचें।

(2) माँडवा : रेगिस्तान का हीरा

डॉ० चक्रवर्ती और सक्सेना रमेश के साथ राजस्थान के शेखावटी जनपद में स्थित माँडवा की सैर करने गए थे। माँडवा को ठाकुर नवल सिंह ने सन् 1775 में बसाया था। यह शहर सन् 1980 तक एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र था। बाद में वे अन्य व्यापारिक केंद्रों से चले गए। यहाँ व्यापारियों की कई बड़ी-बड़ी हवेलियाँ थीं। इन हवेलियों में चित्रकारियों के विभिन्न नमूने देखे जा सकते हैं। आज भी यहाँ की 'सात हवेली' प्रसिद्ध है।

माँडवा में पुराना किला, ठाकुर हरि सिंह स्मारक संग्रहालय आदि जगह देखने लायक हैं। इनमें राजस्थान के वीर राजपुत्रों के अस्त्र-शस्त्र, मूर्तियाँ रखी गई हैं। सिक्के, पुराने वस्त्र आदि वस्तुएँ रखी गई हैं। यहाँ ईसरजी अर्थात शिव, देवी गणगौरजी अर्थात पार्वती की कलात्मक मूर्तियाँ भी रखी गई हैं। यहाँ के बाजारों में चुनरियाँ, जरी की कामवाली साड़ियाँ व मखमली जूतियाँ, लाख की चूड़ियाँ, राजस्थानी शैली के मनमोहक चित्र-ये सब लोगों को आकर्षित करते हैं। यहाँ ऊँटों की सवारी भी लोकप्रिय हैं। विदेशी पर्यटक अत्यन्त चाव से ऊँटों की सवारी करते हैं। इन्हीं सब बातों के कारण माँडवा को रेगिस्तान का हीरा कहते हैं।

(3) आखिरी वसीयत

पं० जवाहर लाल नेहरू ने अपनी आखिरी वसीयत में कहा है कि मेरे देश की जनता ने मेरे हिंदुस्तानी भाइयों और बहनों ने मुझे इतना प्रेम और सम्मान दिया है कि मैं चाहे जितना कुछ करूँ वह छोटे से हिस्से का भी बदला नहीं हो सकता। देशवासियों के प्यार को इतना कीमती समझते हैं कि वे इसके बदले में कुछ देना भी मुमकिन नहीं मानते। इसलिए मैं इस प्रेम के योग्य बनने के लिए अपने देश की सेवा करता रहूँगा।

आखिरी वसीयत में उन्होंने यह इच्छा प्रकट की है कि मेरे मरने के बाद कोई धार्मिक रस्म अदा न की जाए।

उन्होंने यह भी कहा है कि मेरे मरने पर मेरा दाह-संस्कार कर दिया जाए और मेरी अस्थियों की एक मुट्ठी गंगा में डाली जाए। गंगा में अस्थियाँ डालने के पीछे नेहरूजी की कोई

3—558 CH Dte/2008

धार्मिक भावना नहीं थी बल्कि उसका कारण थी गंगा यमुना के प्रति उनका बचपन से लगाव। और बाकी हिस्से को हवाई जहाज की सहायता से देश के हर उन खेतों में बिखेर दिया जाए जहाँ भारत के किसान मेहनत करते हैं ताकि वह भारत की मिट्टी में मिल जाएँ और उसी का अंग बन जाए। वे अपनी भस्म को देश की मिट्टी में मिला देना चाहते थे। 10×2=20

5.

	शब्द	वाक्य प्रयोग
(क) (1)	एक-एक करके	कृपया एक साथ न घुसकर पंक्ति में एक-एक करके अंदर आइए।
(2)	परिवहन	एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए हमारे शहर में परिवहन की अच्छी व्यवस्था नहीं है।
(3)	शायद	पिताजी अस्वस्थ हैं शायद कार्यालय न जाएँ।
(4)	अनुभव	उनको पढ़ाने का दस वर्ष का अनुभव है।
(5)	इंतजार करना	वह दो घंटे से बस का इंतजार कर रहा था।
(6)	सैर-सपाटा	छात्र श्रीनगर सैर-सपाटे के लिए गए हैं।
(7)	विशेषता	चंबल नदी की विशेषता है कि वह दक्षिण से उत्तर की ओर जाती है।
(8)	हाथ मलते रह जाना	अभी से तैयारी कर लो नहीं तो समय निकल जाने पर हाथ मलते रह जाओगे।
(9)	अतिथी	आज मेरे घर मुंबई से कुछ अतिथि आए हैं इसलिए कार्यालय नहीं आ सकूँगा।
(10)	माफ कीजिए	माफ कीजिए नियम के विरुद्ध में आपकी सहायता नहीं कर सकता।

(11)	बधाई देना	मैं तुम्हें हिंदी डिप्लोमा परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर बधाई देता हूँ।

(ख) मलयाळम शब्द		हिंदी पर्याय
(i)	സ്ഥലംമാറ്റം	स्थानांतरण
(ii)	സഹാനുഭൂതി	सहानुभूति
(iii)	എതിർപ്പ്	आपत्ति
(iv)	പുഞ്ചിരിക്കുക	मुस्कराना
(v)	വഴക്ക്	झगड़ा
(vi)	ചരമ വാർഷികം	पुण्य तिथि
(vii)	പവിത്രമായ	पवित्र
(viii)	ക്രമമായി	नियमित रूप से
(ix)	സാധാരണമായ	सामान्य
(x)	മാദ്ധ്യമം	माध्यम
(xi)	കുറ്റം	अपराध
(xii)	പോക്കറ്റടിക്കാരൻ	पाकेटमार, जेबकतरा
(xiii)	ആഘോഷം	पर्व
(xiv)	ശ്രദ്ധയില്ലാതെ	लापरवाह
(xv)	വരം	वरदान

ചോദ്യം—6. ഉത്തരം

6. (क) हमारे यहाँ देवी-देवता के नाम पर नर बलि दी जाती है।

(ख) देवराला का सती-काँड नारी पर अत्याचार का निर्लज्ज उदाहरण है।

(ग) देवराला के सती-काँड से प्रत्येक सहृदय व्यक्ति का सिर शर्म से झुक जाता है।

(घ) किसी स्त्री को सती होने के लिए अकसर उसके परिवार और समाज के लोग विवश करते हैं।

(ङ) देवराला का सतीकाँड/धर्म के नाम पर कुरीतियाँ।

ചോദ്യം—7 ഉത്തരം

(1) न्याय

एक दिन जब सिद्धार्थ अपने महल के बाग में बैठे अपने मित्र से बात कर रहे थे तब एकाएक एक हंस उनकी गोद में आ गिरा। सिद्धार्थ ने देखा कि हंस किसी के तीर से घायल था। सिद्धार्थ ने उसके शरीर से तीर निकाल दिया। उसकी जान बचाने के लिए उन्होंने मित्र को भेजकर राजवैद्य से मरहम मँगवाया। उसी समय देवदत्त वहाँ आया। उसने सिद्धार्थ से हंस माँगा और कहा कि हंस को मैंने तीर से मारकर गिराया है। इसलिए मेरा है। सिद्धार्थ ने कहा कि मैंने बचाया है इसलिए हंस मेरा है, शरणागत की रक्षा करना क्षत्रिय का धर्म है और उसे नहीं दूँगा। सिद्धार्थ के मित्र ने सुझाव दिया कि इस झगड़े का निर्णय महाराज से करवाया जाए। दोनों राजकुमार के फैसले के लिए महाराज शुद्धोधन के पास गए। महाराज को इस झगड़े का फैसला करना कठिन लगा। उन्होंने अपने मंत्री से सुझाव माँगा। मंत्री के कहने पर हंस को एक जगह बैठा दिया गया। फिर दोनों राजकुमारों से बारी-बारी से हंस को बुलाने के लिए कहा गया। देवदत्त ने पहले बुलाया लेकिन हंस डर के मारे चीख पड़ा। जब सिद्धार्थ ने बुलाया तब हंस उनके पास चला गया। इस पर मंत्री ने राजा से कहा कि हंस ने स्वयं झगड़ा सुलझा दिया है कि वह किसके पास रहना चाहता है। मंत्री के सुझाव पर महाराज ने हंस सिद्धार्थ को देने की आज्ञा दी।

(2) सुखमय जीवन

जयदेवशरण वर्मा ने 'सुखमय जीवन' नाम की एक किताब लिखी। इस पुस्तक में उन्होंने जीवन को सुखी बनाने के उपायों के बारे में लिखा था। यह पुस्तक बहुत लोकप्रिय हुई।

एक बार जयदेवशरण वर्मा साइकिल से अपने मित्र के घर जा रहे थे। रास्ते में उनकी साइकिल पंचर हो गई। वे साइकिल को खींचते हुए ले जा रहे थे। एक कन्या को उनकी इस हालत पर दया आई। वह उनको अपने घर ले गई। कन्या के पिता 'सुखमय जीवन' के बड़े प्रशंसक थे। जब उन्हें बेटी से यह मालूम हुआ कि 'सुखमय जीवन' के लेखक जयदेवशरण यही है तब— उनको बड़ी प्रसन्नता हुई।

जयदेवशरण के बारे में गुलाबराय व उनके परिवार के लोग यही समझते थे कि वे शादी शुदा हैं और अपने अनुभवों के आधार पर ही उन्होंने 'सुखमय जीवन' लिखा है। इसलिए जब जयदेवशरण से गुलाबराय ने किताब के आधार पर उनके वैवाहिक जीवन के अनुभव की प्रसंग की तब वे चुप रह गए। जब कि उनको चाहिए था कि वे साफ कह देते कि अभी उनकी शादी नहीं हुई है। पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। परिवार की धारणा इससे पुष्ट हो गई।

जयदेवशरण मन ही मन कन्या के रूप पर मोहित हो गए थे। एकांत पाकर उन्होंने जब कन्या से अपना प्रणय-निवेदन किया तब न केवल कन्या बल्कि उसके माता-पिता सभी ने जयदेवशरण के ऐसे अनुचित व्यवहार से क्रोध प्रकट किया। जयदेवशरण को बताना पड़ा कि मैं अभी तक कुँआरा हूँ। यदि आपकी आज्ञा हो तो कमला और मैं सच्चे सुखमय जीवन का प्रारंभ करे। गुलाबराय ने प्रसन्नता से सहमति दे दी।

(3) बस टिकट

'बस टिकट' एकांकी दिल्ली की बसों में रोज होने वाली घटनाओं में से एक है। बस आने से पहले यात्री लाइन में खड़े रहते हैं पर बस के आते ही भगदड़ मच जाती है। एक दिन की बात है जब बस-कंडक्टर लोगों से लाइन में आने के लिए कहता है तब एक लालाजी बोल उठते हैं कि लाइन में मैं सबसे आगे था। उनके पीछे खड़ा मनोहर उनको छेड़ता है और कहता है कि 'लाइन में आप नहीं आपकी तोंद आगे थी। आप दूसरे नंबर पर थे। लालाजी को बुरा लगता है। इस बीच कंडक्टर सबसे टिकट ले लेने को कहता है और लालाजी से पूछता है कि आप को कहाँ जाना है लालाजी कहते हैं मुझे टिकट दे दो जहाँ तक बस जाती है। मेरी जहाँ मर्जी होगी उतर जाऊँगा। लालाजी डेढ़ रुपए का टिकट लेते हैं। कंडक्टर कहता है कि आप बगैर टिकट नहीं बैठ

सकते हैं। मनोहर कहता है बैठ सकता हूँ। तब लालाजी बीच में बोल पड़े हैं। एक तो टिकट नहीं लेते ऊपर से बस में यात्रा करना चाहते हैं। मनोहर लालाजी को धमकाता है अगर आप चुप नहीं रहे तो सबके सामने पोल खोल दूँगा। मनोहर के टिकट न लेने के कारण बस को थाने ले जाना पड़ता है। थानेदार मनोहर से पूछता है कि तुमने टिकट क्यों नहीं लिया। मनोहर बताता है कि मैं टिकट नहीं लूँगा क्योंकि मेरे पास 'पास' है। तब कंडक्टर कहता है कि आपने पहले क्यों नहीं बताया।

1. प्रसंग—यह कविता हिंदी के प्रसिद्ध कवि पं० रामनरेश त्रिपाठी द्वारा लिखी गई है। कविता का शीर्षक है 'खोज'।

व्याख्या—इस कविता के माध्यम से कवि रामनरेश त्रिपाठी यह कहना चाहते हैं कि मैं जब भगवान को कुंज और उपवन के एकांत में ढूँढता फिर रहा था तब भगवान मुझे दीन तथा असहायों के बीच खोज रहे थे। अर्थात भगवान वास्तव में वन उपवन अथवा एकांत तप-साधन में नहीं गरीबों तथा बेसहारा लोगों के बीच मौजूद रहते हैं। कवि फिर कहता है कि हे प्रभो! तू किसी गरीब पीड़ित तथा कष्टमय व्यक्ति की आह बनकर मुझे पुकार रहा था। जबकि मैं भक्ति संगीत अथवा गीत भजन के द्वारा तुझे प्राप्त करना चाहता था।

कवि के कहने का अर्थ यह है कि भगवान को हम दीन-दुखियों के रूप में देख सकते हैं, न कि वन, उपवन मंदिर, मसजिद, और कीर्तन आदि में।

अथवा (അഥവാ)

प्रसंग—ये पंक्तियाँ श्री रामावतार त्यागी की प्रसिद्ध कविता 'आह्वान' से ली गई हैं। इस कविता में कवि परिश्रम करने के लिए देश के लोगों का आह्वान करता है।

व्याख्या—कवि कहना चाहता है कि हमें खाली बैठकर समय नष्ट नहीं करना चाहिए, देश की रक्षा और समृद्धि के लिए परिश्रम करना चाहिए। भले ही आकाश में बादल, धरती काँपने लगे, गरजे, मुसीबतों की आंधियाँ आएँ, बिजलियाँ गिरें हमें घबराना नहीं चाहिए। ऐसे समय में हमें इन मुसीबतों से डरकर घर में छिपे नहीं रहना चाहिए। यह तो हाथों में कुदाल उठाकर खेतों में काम करने का और हिमालय की रक्षा करने का समय है।

2. प्रसंग—यह उद्धरण 'बस टिकट' एकांकी से लिया गया है। बस में बैठे मनोहर और एक लालाजी के बीच नोक-झोंक चल रही थी। कंडक्टर के कहने पर भी मनोहर टिकट नहीं लेता और बस में बैठे रहना चाहता है तब लालाजी बोल उठते हैं 'चोरी और सीनाजोरी' इस पर मनोहर यह कहता है :—

व्याख्या—लालाजी आपको चुप रहना चाहिए। यदि आप चुप नहीं रहेंगे तो आपकी पोल खोल दूँगा कि आप लोगों को धोखा देते हैं। खाने-पीने में मिलावट करते हैं। मैं आपके पड़ोस में रहता हूँ इसलिए अच्छा होगा कि आप चुपचाप रहे नहीं तो सारा भंडा फोड़ दूँगा।

अथवा

प्रसंग—यह अवतरण 'काम करो सोच में न पड़े रहो', नामक पाठ से लिया गया है। इस पाठ में महात्मा भगवानदीन यह सलाह देते हैं कि मनुष्य को काम अधिक करना चाहिए, केवल विचारों में डूबे नहीं रहना चाहिए। अक्सर लोग यह सोचकर कार्य आरंभ नहीं करते कि गलतियाँ हो जाएँगी।

व्याख्या—हम जीवन में कई गलतियाँ करते रहते हैं इन गलतियों से हम जो कुछ सीखते हैं उससे हमारी बुद्धि का विकास होता है। गलतियों से शिक्षा लेना और फिर वैसी गलतियाँ न करना ही आदमी की समझदारी है, बुद्धिमानी है। इसी को लेखक ने अक्ल या बुद्धिमानी कहा है।

पाठ } — 22
പാഠം

ഉള്ളടക്കം

1.0 മുഖവുര

2.0 മാതൃകാ ചോദ്യപേപ്പർ

3.0 ഉത്തരങ്ങൾ

1.0 മുഖവുര

ഹിന്ദി ഡിപ്ലോമ കോഴ്സിൻെറ ചോദ്യപേപ്പർ-2-ൻെറ മാതൃകയിലാണ് ഈ പാഠം തയ്യാറാക്കിയിരിക്കുന്നത്.

മാതൃക ചോദ്യപേപ്പർ 2-ൽ പ്രയോഗിക വ്യാകരണം, തർജ്ജമ, ഉപന്യാസ രചന തുടങ്ങിയവയാണ് ഉൾപ്പെടുത്തിയിട്ടുള്ളത്.

ഇവിടെ എല്ലാ ചോദ്യങ്ങൾക്കും ഉപചോദ്യങ്ങൾക്കും ഉത്തരം നൽകിയിരിക്കുന്നു. എന്നാൽ ആവശ്യപ്പെട്ടിട്ടുള്ളത്ര ചോദ്യങ്ങൾക്ക് നിങ്ങൾ ഉത്തരം എഴുതിയാൽ മതിയാകും.

2.0 മാതൃകാ ചോദ്യപേപ്പർ —2

हिंदी डिप्लोमा परीक्षा

ഹിന്ദി ഡിപ്ലോമ പരീക്ഷ

प्रश्न-पत्र-II (व्यावहारिक व्याकरण, अनुवाद तथा रचना)

ചോദ്യപേപ്പർ-2 (പ്രായോഗിക വ്യാകരണം, തർജ്ജമ, ഉപന്യാസരചന)

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 150

സമയം : 3 മണിക്കൂർ ആകെ മാർക്ക് : 150

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए।

എല്ലാ ചോദ്യങ്ങൾക്കും ഹിന്ദിയിൽ ഉത്തരമെഴുതുക.

1. (क) कोष्ठक में दी गई क्रियाओं की सहायता से किन्हीं पाँच वाक्यों को पूरा कीजिए। 5

ബ്രായ്ക്കറ്റിലുള്ള ക്രിയാ പദങ്ങളുപയോഗിച്ച് ഏതെങ്കിലും അഞ്ചു വാക്യങ്ങൾ പൂരിപ്പിക്കുക.

(1) इलाहाबाद से.....मैं वाराणासी उतरूँगा। (लौटना)

(2) क्या आपने रूसी सरकस.....। (देखना)

(3) इस दूकान में कपड़ा.....। (रंगना)

(4) कृपया गाड़ी यहाँ न.....। (खड़ा करना)

(5) उनसे कहो कि वे यहाँ न.....। (खेलना)

(6) ये मेरे चाचा.....। (लगना)

(7) आपने कोटा-साड़ियों का नाम.....। (सुनना)

(8) माफ कीजिए, मुझे जल्दी.....। (जाना)

4—558 CH Dte/2008

(ख) नीचे लिखे वाक्यों को कोष्ठकों में दिए गए परसर्गों में से उपयुक्त परसर्ग का प्रयोग करके पूरा कीजिए। 5

ബ്രായ്ക്കറ്റിലുള്ള വിഭക്തി പ്രത്യയങ്ങളിൽ നിന്നും ഉചിതമായതു തെരഞ്ഞെടുത്തു പൂരിപ്പിക്കുക.

(1) खून.....जाँच जरूरी है। (का, की, के लिए)

(2) आप.....कौन-सी भाषा आती है ? (को, ने, के लिए)

(3) रेलगाड़ी रात.....कितने बजे आती है ? (को, में, पर)

(4) दोनों.....भाव एक ही है, तीन रुपए किलो। (का, को, के लिए)

(5) रामदास.....पूछो कि रुपया कब मिलेगा। (को, से, ने)

(ग) कोष्ठक में दी गई मलयाळम अभिव्यक्तियों के आधार पर वाक्यों को पूरा कीजिए। 5

ബ്രായ്ക്കറ്റിൽ കൊടുത്തിരിക്കുന്ന മലയാള പദങ്ങൾക്കു തുല്യമായ ഹിന്ദി പദങ്ങളുപയോഗിച്ച് വാക്യങ്ങൾ പൂരിപ്പിക്കുക

(1) .....भी राजस्थान नहीं देखा।

(2) इस पत्र पर तो आपका पता..... ।

(3) दीवार पर गांधी जी का चित्र..... ।

(4) .....मुझे स्वीकार है।

(5) यह काम कुछ..... ।

2. (क) निम्नलिखित शब्दों और प्रत्ययों की सहायता से व्युत्पन्न रूप बनाइए। 5

ചുവടെയുള്ള പദങ്ങൾ/പ്രത്യയങ്ങൾ യോജിപ്പിച്ചെഴുതുക.

(1) नाव + इक = ...

(2) केंद्र + ईय = ...

(3) लिख + इत = ...

(4) पाठ + क = ...

(5) समझ + दार = ...

(ख) नीचे दिए गए प्रत्येक समूह में दो-दो शब्द दिए गए हैं इन शब्दों का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए। 10

ചുവടെ നൽകിയിരിക്കുന്ന പദയുഗ്മങ്ങൾ അർത്ഥ വ്യത്യാസം വ്യക്തമാകത്തക്കവണ്ണം വാക്യത്തിൽ പ്രയോഗിക്കുക.

(1) में-मैं .....

.....

(2) शर्मीला-शर्मिंदा .....

.....

(3) जय-पराजय .....

.....

(4) अंदर-अंतर .....

.....

(5) जयंती-पुण्य तिथि .....

.....

(6) सिखाना-सीखना .....

.....

(7) अगला-पिछला .....

.....

3. (i) नीचे लिखे वाक्यों को नमूने के अनुसार बदलिए। 20

മാതൃകയനുസരിച്ച് താഴെ കൊടുത്തിരിക്കുന്ന വാക്യങ്ങളെ മാറ്റിയെഴുതുക

1. മാതൃക : आप कोई चिंता न करें।

आपको कोई चिंता नहीं करनी चाहिए।

(क) आप तली हुई चीजें न खाएँ

.....

(ख) हम दूसरों की मदद करें।

.....

(ग) मैं वह किताब क्यों न पढ़ूँ ?

.....

(घ) वे वहाँ कब जाएँ ?

.....

2. മാതൃക : रुपए होते और मैं आपको न देता।

रुपए होते तो मैं आपको जरूर देता।

(क) रमेश कहता और सक्सेना साहब न मानते।

.....

(ख) चिट्ठी मिलती और वह यहाँ न आती।

.....

(ग) आप लेख भेजते और संपादक न छापते।

.....

(घ) वार्षिक सभा होती और आप न चुने जाते।

.....

3. മാതൃക : घोड़ा आगे नहीं बढ़ रहा था।

घोड़ा आगे बढ़ने का नाम नहीं ले रहा था।

(क) राधा गा नहीं रही थी।

.....

(ख) बैल नहीं चलते थे।

.....

(ii) नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए।

തെറ്റുതിരുത്തുക

(1) अधिकारी ने कई पत्र लिखा था।

.....

(2) मैं दफ्तर पैदल जाना पड़ता है।

.....

(3) तुम हिंदी बोलना जानती है।

.....

(4) मिस मालती समारोह में कविता सुनाई।

.....

(5) आपसी विवादों से हमारा राष्ट्रीय एकता को खतरा है।

.....

4. बाकी उत्तर-पत्रों को शीघ्र भेजने के अनुस्मारक पत्र के उत्तर में उपनिदेशक, पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110 066 को पत्र लिखिए।

ഉത്തരക്കടലാസുകൾ പൂരിപ്പിച്ച് അയയ്ക്കുന്നതിൽ വീഴ്ചവരുത്തിയ വിവരം അറിയിച്ചുകൊണ്ട് ഡെപ്യൂട്ടി ഡയറക്ടർ (കറസ്പോണ്ടൻസ് കോഴ്സസ്. സെൻട്രൽ ഹിന്ദി ഡയറക്ടറേറ്റ് ന്യൂ ഡൽഹി - 110066) നിങ്ങൾക്കു അയച്ച കത്തിനു മറുപടി കത്ത് എഴുതുക.

अथवा അഥവാ

परीक्षा के दिनों में बिजली की कटौती न किए जाने के लिए किसी हिंदी दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। 20

പരീക്ഷ അടുത്തിരിക്കുന്ന ദിവസങ്ങളിൽ പവ്വർകട്ട് ഏർപ്പെടുത്താതിരിക്കുന്നതിനുവേണ്ടി ഏതെങ്കിലും ഹിന്ദി ദിന പത്രത്തിൻെറ പത്രാധിപർക്ക് ഒരു കത്തയയ്ക്കുക.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5. नीचे दिए गए अवतरण का उपयुक्त शीर्षक देते हुए सार लिखिए। 15

ചുവടെയുള്ള ഗദ്യഭാഗം സംഗ്രഹിച്ചെഴുതി അതിന് ഒരു ശീർഷകം നൽകുക.

प्रत्येक राष्ट्र के जीवन-निर्वाह के लिए यह आवश्यक है कि देश की प्राकृतिक संपत्ति की रक्षा की जाए तथा उस संपत्ति को उन्नति देने के पूरे-पूरे प्रयत्न किए जाएँ। देश की कृषि, देश की धानों की पैदावार तथा देश की दस्तकारी के बिना रक्षा किए, बिना उनकी उन्नति किए तथा देश के धन को देश के बाहर जाने से रोके किसी भी देश के बच्चों का पालन अथवा उन्हें दरिद्रता तथा दुष्काल के भयानक परिणामों से बचाना सर्वथा दुष्कर है। साथ ही हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि

राष्ट्रीय जीवन तथा राष्ट्रीय उन्नति के लिए देश की प्राकृतिक संपत्ति को उन्नति देने की अपेक्षा देश की मानसिक और नैतिक संपत्ति को उन्नति देना आवश्यक कार्य है। जो राष्ट्र अपनी मानसिक संपत्ति की उचित रक्षा करता है तथा उसे उन्नत बनाने के पूरे-पूरे प्रयत्न करता है केवल वह राष्ट्र ही मान, उत्साह तथा स्वतंत्रता के साथ इस संसार में जीवित रह सकता है। राष्ट्र के बालक बालिकाएँ राष्ट्र की मानसिक और नैतिक संपत्ति हैं जो प्राकृतिक संपत्ति से अधिक मूल्यवान और महत्व की हैं। जो राष्ट्र इस धन की उचित रक्षा और उन्नति नहीं करता वह राष्ट्र उन्नति के पथ से हट कर अवनति के गड्ढे की ओर बढ़ने लगता है।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. नीचे दी गई रूपरेखा के आधार पर एक कहानी लिखिए। 15

താഴെ കൊടുത്തിരിക്കുന്ന രൂപരേഖയെ അടിസ്ഥാനമാക്കി കഥ വികസിപ്പിച്ചെഴുതുക.

किसी गाँव में पंडित रामदीन का जाना ..... वहाँ के सेठ लाला करोड़ीमल के यहाँ उनका आदर सत्कार ..... सेठजी द्वारा उनको एक सुंदर बछड़ा देना.....बछड़े के साथ पंडितजी का अपने घर लौटना। .....तीन ठग.....उनकी ठगने की योजना। बारी-बारी से हर एक ठग का बछड़े को कुत्ता बताना। पंडितजी का ठगा जाना।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5 —558 CH Dte/2008

.....

.....

.....

.....

7. निम्नलिखित में से किसी एक अवतरण का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 20

ഏതെങ്കിലും ഒരു ഖണ്ഡിക ഹിന്ദിയിൽ തർജ്ജമ ചെയ്യുക.

(1) ഈയ്യിടെ കടലാസിനു വളരെയധികം വിലയേറിയിരിക്കുന്നു. ഇതിൻെറ വില മുമ്പിലത്തേതിൽ നിന്നും മൂന്നിരട്ടി വർദ്ധിച്ചിരിക്കയാണ്. ചിലപ്പോൾ കടലാസ് കിട്ടാതെയും വരാറുണ്ട്. അതുകൊണ്ട് ഗാന്ധിജി ഉപയോഗിച്ചതുപോലെ കടലാസ് ഉപയോഗിക്കുന്നതു വളരെ ശ്രദ്ധിച്ചു വേണം. അദ്ദേഹത്തിനു ദിവസം തോറും നൂറുകണക്കിനു കത്തുകൾ വരുമായിരുന്നു. ഈ കത്തുകളൊന്നും ഗാന്ധിജി കളയാറില്ലായിരുന്നു. കത്തുകളുടെ ഡ്രാഫ്റ്റ് അതിൻെറ പിന്നിൽ തന്നെയാണ് എഴുതിയിരുന്നത്. കൂടാതെ ഹരിജൻ മാസികക്കുള്ള ലേഖനങ്ങളും കത്തുകളുടെ പിന്നിൽ തന്നെ എഴുതുമായിരുന്നു. ഇങ്ങനെയുള്ള കാര്യങ്ങൾക്കു പോലും അദ്ദേഹം കടലാസു വാങ്ങാറില്ലായിരുന്നു.

(2) ദക്ഷിണേന്ത്യയിൽ ഹിന്ദിയുടെ പ്രചാരം കണ്ടിട്ട് എനിക്ക് വളരെ സന്തോഷമുണ്ട്. ഭാരതത്തിൽ ഒരു പൊതു ഭാഷ ആവശ്യമാണ്. ഹിന്ദി നമ്മുടെ രാഷ്ട്ര ഭാഷയാകുന്നതുകൊണ്ട് വളരെ പ്രയോജനമുണ്ട്. എന്നാൽ പ്രാദേശിക ഭാഷകൾക്കു ഹിന്ദി ഭാഷകൊണ്ടു യാതൊരു ഹാനിയും സംഭവിക്കുകയില്ല. പല ഭാഷകൾ പഠിക്കുന്നതു ബുദ്ധിമുട്ടാണെന്നു ചിലർ പരാതിപ്പെടുന്നു. എന്നാൽ വാസ്തവത്തിൽ അങ്ങനെയല്ല. മാതൃഭാഷ കൂടാതെ നാലഞ്ചു ഭാഷകൾ കൂടി അറിയാവുന്ന പലരേയും യൂറോപ്പിൽ കാണാം.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिए। 20

താഴെ കൊടുത്തിരിക്കുന്ന വിഷയങ്ങളിൽ ഒന്നിനെക്കുറിച്ച് 250 വാക്കുകളിൽ കുറയാതെ ഉപന്യസിക്കുക.

(i) देश प्रेम। (iii) दीपावली।

(ii) दूरदर्शन। (iv) हमारा पर्यावरण।

.....

.....

.....

.....

.....

6—558 CH Dte/2008

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3. ഉത്തരങ്ങൾ

ചോദ്യം—1, ഉത്തരം

1. (क) (1) इलाहाबाद से **लौटते हुए** मैं वाराणसी उतरूँगा।

(2) क्या आपने रूसी सरकस **देखा है ?**

(3) इस दूकान में कपड़ा **रंगा जाता है।**

(4) कृपया गाड़ी यहाँ न **खड़ी करें।**

(5) उनसे कहो कि वे यहाँ **न खेलें।**

(6) ये मेरे चाचा **लगते हैं।**

(7) आपने कोटा साड़ियों का नाम **सुना होगा।**

(8) माफ कीजिए, मुझे जल्दी **जाना है।**

(ख) (1) खून **की** जाँच जरूरी है।

(2) आप **को** कौन-सी भाषा आती है।

(3) रेलगाड़ी रात **को** कितने बजे आती है ?

(4) दोनों **का** भाव एक ही है—तीन रुपए किलो।

(5) रामदास **से** पूछो कि रुपया कब मिलेगा।

(ग) (1) **मैंने** भी राजस्थान नहीं देखा है।

(2) इस पत्र पर तो आपका पता **लिखा हुआ है।**

(3) दीवार पर गाँधीजी का चित्र **टँगा रहता है।**

(4) **आप जो करें,** मुझे स्वीकार है।

(5) यह काम कुछ **कठिन लगता है।**

ചോദ്യം —2. ഉത്തരം

2. (क) (1) नाविक (2) केंद्रीय (3) लिखित
(4) पाठक (5) समझदार

(ख) (1) **मैं** कमरे **में** किताब पढ़ रहा हूँ।

(2) जयदेव इस बात पर **शर्मिंदा** हुआ कि उसने **शर्मीले** लड़के को तंग किया।

(3) युद्ध में एक राजा की **जय** होती है तो दूसरे की **पराजय** होगी।

(4) घर **के अंदर** इतना अंधेरा था कि चादर और धोती का **अंतर** बताना कठिन हो रहा था।

(5) 2 अक्तूबर को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की **जयंती** मनाई जाती है और 30 जनवरी को उनकी **पुण्य तिथि।**

(6) अध्यापक का कार्य **सिखाना** है और बच्चों को **सीखना** है।

(7) दुर्घटना में बस का **अगला** पहिया टूट गया और कार का **पिछला** पहिया।

ചോദ്യം —3. ഉത്തരം

3. (i) (1) (क) तुमको तली हुई चीज़ें नहीं खानी चाहिए।

(ख) हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए।

(ग) मुझे वह किताब क्यों नहीं पढ़नी चाहिए?

(घ) उनको वहाँ कब जाना चाहिए?

(2) (क) रमेश कहता तो सक्सेना साहब जरूर मानते।

(ख) चिट्ठी मिलती तो वह जरूर आती।

(ग) आप लेख भेजते तो संपादक जरूर छापते।

(घ) वार्षिक सभा होती तो आप जरूर चुने जाते।

(3) (क) राधा गाने का नाम नहीं ले रही थी।

(ख) बैल चलने का नाम नहीं ले रहे थे।

(4) (क) अधिकारी ने कई जवाब लिखे थे।

(ख) मुझे दफ़्तर पैदल जाना पड़ता है।

(ग) तुम हिंदी बोलना जानती हो।

(घ) मिस मालती ने समारोह में अपनी बहन से कविता सुनवाई।

(ङ) आपसी विवादों से हमारी राष्ट्रीय एकता को खतरा है।

ചോദ്യം —4. ഉത്തരം

उपनिदेशक, पत्राचार विभाग को पत्र

परीक्षा भवन,

चंडीगढ़।

दिनांक : 25-5-2001

सेवा में

उपनिदेशक,

पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग,

केंद्रिय हिंदी निदेशालय,

रामकृष्णपुरम,

नई दिल्ली-110 066

महोदय,

दिनांक 25-4-2001 का आपका पत्र सं०.....मिला। इस पत्र में आपने उत्तर-पत्र (संख्या 13 से 16 तक) शीघ्र भेजने के लिए लिखा है। इस संबंध में मुझे यह कहना है कि मैंने उत्तर-पत्र संख्या 13 और 14 मार्च के दूसरे सप्ताह में भेजे थे। आपके कार्यालय से ये पत्र मूल्यांकन के बाद मुझे वापस भी मिल गए हैं। मुझे उत्तर-पत्र 13 में 15/20 और 14 में 13/20 अंक मिले हैं।

7—558 CH Dte/2008

उत्तर-पत्र 15 और 16 मैंने अप्रैल के पहले सप्ताह में भेजे हैं। लगता है वे आपको नहीं मिले हैं। कृपया, एक बार फिर अपने रिकार्ड देखकर मुझे सूचित करें। यदि आपके ये उत्तर-पत्र न मिले हो तो यथाशीघ्र दूसरे खाली उत्तर-पत्र भिजवाएँ। मैं उन्हें फिर से भरकर भेज दूँगा।

धन्यवाद सहित,

भवदीय,

(क०ख०ग०)

अनुक्रमांक

अथवा

हिंदुस्तान दैनिक के संपादक के नाम पत्र

परीक्षा भवन,

लखनऊ,

दिनांक: 2-5-01

सेवा में

'हिंदूस्तान दैनिक'

बहादुरशाह जफर मार्ग,

नई दिल्ली-110 001

प्रिय महोदय,

दिल्ली जैसे बड़े शहरों में बिजली के बिना सामान्य जीवन बहुत-ही कठिन है। इसके बिना विद्यार्थियों को होने वाली कठिनाई का अनुमान आप आसानी से लगा सकते हैं। फिर भी बिजली विभाग हम विद्यार्थियों की कठिनाइयों पर बिलकुल ध्यान नहीं देता। वह परीक्षा के दिनों में भी बिजली की कटौती करता है। इन दिनों हमें बड़े ध्यान से मन लगाकर पढ़ने की आवश्यकता होती है। रात में हमें देर तक पढ़ना पड़ता है। अगर बिजली ही न होगी तो हम कैसे पढ़ सकेंगे? पर भला बिजली विभाग को यह बात कैसे समझाई जाए? मैं आपके प्रतिष्ठित पत्र के माध्यम से

बिजली विभाग के अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूँ और उनसे निवेदन करता हूँ कि परीक्षा के दिनों में बिजली की कटौती बिलकुल न की जाए।

भवदीय

(अ ब स)

अनुक्रमांक

ചോദ്യം —5. ഉത്തരം

प्राकृतिक और मानसिक संपत्तियों की रक्षा

देश की उन्नति तथा आर्थिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि खेतों खानों और कल-कारखानों में अधिक से अधिक उत्पादन हो। आर्थिक उन्नति के साथ-साथ देशवासियों का मानसिक विकास भी आवश्यक है, बल्कि मानसिक उन्नति को अधिक प्रधानता देनी चाहिए। जिस राष्ट्र के निवासियों का मानसिक तथा नैतिक स्तर नीचा रह जाता है वह राष्ट्र भौतिक समृद्धि के बावजूद उन्नति नहीं कर पाता।

ചോദ്യം —6. ഉത്തരം

पंडित रामदीन और तीन ठग

एक बार पंडित रामदीन धनपुर के सेठ के घर पूजा कराने गए। लोगों के घरों में पूजा कराते और जो कुछ दक्षिणा मिलती उससे अपना परिवार चलाते। श्रद्धालु सेठ ने उनका आदर-सत्कार किया। पूजा पाठ के बाद सेठ ने पंडितजी को एक सुंदर बछड़ा दान में दिया।

पंडितजी बछड़े को कंधे पर रखकर मस्ती से जा रहे थे उन्हें देखकर तीन ठगों ने योजना बनाई कि पंडितजी से कैसे बछड़ा चुराया जाए। एक ठग पंडितजी के सामने आया उसने पंडितजी को प्रणाम किया और पूछा, ''पंडितजी'', आपको कुत्ता पालने का शौक कब से हो गया।

''क्या कहते हो, भाई! कुत्ता यहाँ कहाँ है?'' पंडित रामदीन ने पूछा।

''पंडितजी! मैं नहीं जानता था कि आप इतने भोले होंगे! आप जिसे कंधे पर लादे ले जा रहे हैं वह कुत्ता नहीं है तो क्या है?''

थोड़ी दूर गए ही थे कि दूसरा ठग सामने आया। उसने पंडितजी के पैर छुए और बोल उठा। आपका कुत्ता तो बड़ा सुंदर है। रास्ते में कुत्ता अच्छा साथी होता है। पंडितजी नाराज़ होकर बोले, यह बछड़ा है और मुझे धन पूर के सेठ ने दान में दिया है, यह कहकर वह ठग भी चला गया। पर पंडितजी के मन में शंका होने लगी कि कहीं यह सचमुच कुत्ता तो नहीं है।

पंडितजी अभी आगे बढ़े ही थे कि तीसरा ठग मिला। वह बोला पंडितजी इतने धार्मिक व्यक्ति होकर भी कुत्ते को कंधे पर उठाए क्यों चले जा रहे हैं, पंडितजी को अब विश्वास हो गया कि यह बछड़ा नहीं कुत्ता ही है। वे उसे वहीं छोड़कर सेठ को गाली देते हुए चले गए। इस तरह ठगों ने योजना के अनुसार बछड़ा पा लिया।

ചോദ്യം —7. ഉത്തരം

(1) आजकल कागज बहुत महँगा हो गया है। इसका दाम पहले की अपेक्षा अब तीन गुना है। कभी-कभी तो वह मिलता भी नहीं है। इसलिए कागज का उपयोग करने में उतनी सावधानी बर्तनी चाहिए जैसे गांधीजी बरतते थे। प्रतिदिन उनकी सैकड़ों चिट्ठियाँ आती थीं। गांधीजी उन पत्रों को फेंकते नहीं थे। वे उनके पीछे अपने पत्रों के मसौदे लिखा करते थे। कभी-कभी वे उन पर अपनी पत्रिका 'हरिजन' के लिए लेख भी लिखते थे। वे ऐसे कामों के लिए कागज कभी-कभी खरीदते थे।

(2) दक्षिण भारत में हिंदी की प्रगति देखकर मुझे असीम प्रसन्नता होती है। समूचे भारत के लिए एक जन सामान्य भाषा का होना अत्यंत आवश्यक है। हिंदी को संपर्क-भाषा बनाने में अनेक लाभ हैं। हिंदी के द्वारा प्रादेशिक भाषाओं के अहित होने की कोई आशंका नहीं है। कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि मातृभाषा के अतिरिक्त दूसरी भाषाएँ सीखना मुश्किल है परंतु, यह गलत धारणा है। यूरोप में ऐसे बहुत-से लोग हैं जो अपनी मातृभाषा के अलावा चार-पाँच अन्य भाषाएँ जानते हैं।

1. देश प्रेम

हर व्यक्ति को अपनी माँ से प्यार होता है। माता हमें जन्म देकर पालन-पोषण करती है। वह स्वयं कष्ट सहती है पर अपने बच्चों को कष्टों से बचाती है। माता का यह प्रेम क्या कभी भूला जा सकता है ? हमारी धरती भी हमारी माँ है जिसकी गोद में हम खेलते-कूदते हैं, अपनी सारी जिंदगी गुजारते हैं। इस तरह अपने देश की धरती से प्यार होना स्वाभाविक है।

देश-प्रेम के कारण हमें अपने देश की हर चीज़ अच्छी लगती है। यहाँ की भाषाएँ, यहाँ के लोगों के आचार-विचार, रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा सब हमें प्यारा है। हम चाहते हैं कि हमारा देश दुनिया के सभी देशों से अधिक ज्यादा खुशहाल और समृद्ध हो साथ ही इतना संपन्न भी हो कि कोई शत्रु आक्रमण करने का साहस न कर सके। देश-प्रेम की भावना के कारण हम इस देश पर किसी भी प्रकार का हमला सह नहीं सकते। आज जो पश्चिमी सभ्यता का घातक हमला हो रहा है, उसे रोकने के लिए कोई कमी नहीं रखनी चाहिए।

हम चाहते हैं कि हमारा देश आधुनिक सुख-सुविधाओं वाला देश बने, और साथ ही हम दुनिया को आध्यात्मिक मार्ग भी दिखा सकें। हम अपने लक्ष्य को तभी पा सकेंगे जब हम देश-प्रेम को आदर्श प्रेम बनाने का संकल्प लेंगे।

2. दूरदर्शन

आज विज्ञान के चमत्कारों की कोई कमी नहीं है। दूरदर्शन विज्ञान के अनेक चमत्कारों में से एक है। इसके द्वारा घर बैठे दूर-दूर की बातों को सुनना एवं देखना कितना आसान हो गया है। अपना टेलीविजन सेट खोलिए और फिर देखिए आपसे दूर-मीलोंदूर-होने वाली घटनाएँ कितनी नजदीक आ गई हैं। आज दूरदर्शन हमारे जीवन की आवश्यकता बन चुका है।

दूरदर्शन से कई लाभ हैं। देश-विदेशों में होने वाले समारोह, आयोजन, कार्यक्रम, प्रदर्शन अनेक छोटी-बड़ी महत्वपूर्ण घटनाएँ, /दूरदर्शन के माध्यम से देखी जा सकती हैं। खेल प्रेमियों के लिए तो यह वरदान है। वे घर बैठे ही देश के किसी भी भाग में या विदेशों में खेले जाने वाले खेलों को सीधे देख-सुन सकते हैं। इसके द्वारा विश्व के दर्शनीय स्थल जैसे हिमालय की बर्फ से ढकी

चोटियाँ, सहारा का रेगिस्तान, अफ्रिका के घने जंगल, नयाग्रा का विश्व प्रसिद्ध जलप्रपात, सारनाथ के बौद्ध विहार, अजंता एलोरा भित्ति चित्र और-मूर्तियाँ आदि देखे जा सकते हैं। दूरदर्शन से हमारी शिक्षा के कार्यक्रम भी चलाए जा सकते हैं। मुक्त विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थानों का ध्यान इस ओर गया है। निकट भविष्य में दूरदर्शन हमारी शिक्षा का आवश्यक साधन बन जाएगा।

दूरदर्शन से हानियाँ भी हैं। दूरदर्शन के कार्यक्रमों की आज इतनी भरमार है कि बच्चों को पढ़ने लिखने व खेलने का समय नहीं मिलता। बड़े मित्रों व संबंधियों से मिलने का समय नहीं निकाल पाते। उसके तेज प्रकाश से आँखें कमजोर हो जाती हैं। चित्रों को देखकर हमें कल्पना का और सोचने का मौका कम मिलता है। हम बहुत जल्दी दूसरों के विचारों से प्रभावित हो जाते हैं।

अंत में यह कहा जा सकता है कि दूरदर्शन हमारे ज्ञानवर्धन का एक आवश्यक साधन है।

3. दीपावली

भारत में कई धर्मों और जातियों के लोग रहते हैं। इसलिए यहाँ कई प्रकार के पर्व मनाए जाते हैं। दीपावली हिंदुओं का त्यौहार है। लोग इस त्यौहार के आने के कुछ दिन पहले से ही घरों और दुकानों की लिपाई-पुताई करते हैं, उन्हें रंग-रोगन से सजाते हैं। घरों में तरह-तरह के पकवान बनाए जाते हैं। लोग नए-नए वस्त्र पहनते हैं। यह पर्व वर्षा ऋतु के बाद कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। कहा जाता है कि रावण का वध करके सीता और लक्ष्मण के साथ श्रीराम इस दिन अयोध्या लौटे थे। उनके लौटने पर अयोध्या वासियों ने खुशियाँ मनाईं। घरों को सजाया और उनके स्वागत में दीप जलाए। इसी उपलक्ष्य में आज भी यह पर्व राम की रावण पर, असत्य पर सत्य, अन्याय पर न्याय की विजय का प्रतीक है।

दीपावली का अर्थ है—दीपों की पंक्ति। इस दिन, रात को लोग अपने घरों को दीपों से सजाते हैं। चारों ओर दीपक जगमगाते हैं और अमावस्या की रात पूर्णिमा की रात जैसी प्रतीत होती है।

घर में लोग लक्ष्मी और गणेश की पूजा करते हैं। व्यापारी अपना नया वर्ष इसी दिन से शुरू करते हैं आतिशबाजी और पटाखों की धूम से आसमान गूँज उठता है। लोग एक-दूसरे को बधाई देते हैं।

दीपावली सचमुच खुशियों और समृद्धि का पर्व है।

4. हमारा पर्यावरण

आज हमें चारों ओर धूल और धूआँ, शोर और बदबू, गंदगी और बीमारी दिखाई पड़ती है। वैज्ञानिक साधनों, कल-कारखानों और बढ़ती हुई आबादी ने हमारे पर्यावरण को सबसे अधिक दूषित किया है दिन-प्रतिदिन हमारे चारों ओर हरियाली घट रही है और पेड़-पौधे भी अब कम होते जा रहे हैं। आज अगर भीड़ है तो वह है गाड़ियों की, फैक्ट्रियों की और शोर मचाते हुए जन-समूह की। ऐसे में हम सबकी जिम्मेदारी है कि हम पर्यावरण को शुद्ध और स्वच्छ बनाएँ।

यदि गाँवों में धूल से भरी सड़कें हैं, सड़ा-गला कूड़ा-कचरा है तो शहर भी इनसे ज्यादा साफ-सुथरे नहीं हैं। यहाँ शहरों में कई गंदी बस्तियाँ हैं, कूड़े-कचरों के पहाड़ हैं, और तरह-तरह की बीमारियाँ हैं। सड़कों पर दौड़ने वाली गाड़ियों के धुएँ तो हैं ही, बड़े-बड़े कारखानों की चिमनियों से निकलने वाली जहरीली गैसें भी कम खतरनाक नहीं हैं। भोपाल की यूनियन कारबाइड गैस की दुर्घटना तो बड़ी दुर्घटना थी छोटे पैमाने पर हर शहर में कई वर्षों से यही ढर्रा चला आ रहा है। पास के नदी-नालों के पानी को अपने गंदे पानी और रसायनों से ज़हरीला बनाने में ये कारखाने पीछे नहीं हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम इन पर अधिक से अधिक ध्यान दें और पर्यावरण को स्वच्छ बनाएँ।

MGIPF—558 CH Dte/2008—22.7.2008—2,000 Books